सिंधी

कामधेनु सेवक सहदेव भाटिया
विद्युत अभियंता, भारतीय गोवंश के जानकार
अखिल विश्व कामधेनु परिवार
21सी, जयराज कोम्प्लेक्स, सोनी नी चाल,
ओढव मार्ग अहमदाबाद 382415
मोबाइल

सीधी नस्ल पर मैं सरल हिंदी में सचित्र विस्तार से प्रमाणिक वैज्ञानिक जानकारी दे रहा हूं. आशा है भारत के प्रत्येक गांव में यह पुस्तक, वीडियो सीडी, डीवीडी, कौन बनेगा गोवंश सेवक? प्रतियोगिता के माध्यम से सींधी नस्ल के संपूर्ण विकास करने के लिये आप मुझे आर्थिक सहयोग अवश्य देंगे.

सींधी नस्ल विश्व की सबसे दुधारु गोवंश पाकिस्तान के सिध की है. भारत के विभाजन के बाद पाकिस्तान में सींधी नस्ल रह जाने के कारण भारत में सींधी नस्ल का विकास पूरी तरह से रुक गया. ब्राजील में भारत से सींधी नस्ल मंगवाकर सींधी नस्ल का संपूर्ण विकास दूध के उत्पादन करने के लिए किया गया है. सींधी नस्ल भारत और पाकिस्तान से 31 देशों में निर्यात की गयी है.

2007 में विश्व गो सम्मेलन के बाद में 2009 में विश्व मंगल गो ग्राम यात्रा की गयी है जो 17 जनवरी 2010 तक पूरी हो जायेगी एवं जिसका मुख्य उददेश्य सींधी नस्ल जैसी महत्वपूर्ण नस्ल को पूरी तरह से सुरक्षित रखना है. 2010 में हरिद्वार में होने वाले पूर्ण कुंभ मेले में भी गोवंश के संवर्धन करने के लिए 1 माह तक जागरण चलेगा.

भारत से दूध के लिए भैंस की मांग किसी देश ने नहीं की है. विश्व में कई देशों में भैंस नहीं है. विश्व में भैंस पालना कोई पसंद नहीं करता है. भैंस का दूध पीना कोई भी पसंद नहीं करता है. विश्व में सिर्फ भारतीय गोवंश की मांग है. सींधी पर 31 देशों में गहन अनुसंधान करके संपूर्ण रुप से विकसित की गयी है. सींधी नस्ल ने विश्व के कई देशों को मालामाल कर दिया है.

भारत में सींधी नस्ल दूध के बहुत अधिक उत्पादन करने के नाम पर वर्णसंकर जानवरों और भैंसों के लगातार विकास करने के कारण पूरी तरह से लुप्त हो चुकी है. गिनी चुनी सींधी नस्ल को भारत में सुरक्षित रखने के लिये ग्रामीण कामधेनु विश्वविद्यालय की तुरन्त आवश्यकता है.

भारत वर्तमान में विश्व में दूध उत्पादन में भैंस और वर्णसंकर जानवरों के कारण प्रथम स्थान पर पहुंच गया है. साल भर में 9 करोड 15 लाख टन दूध का उत्पादन हुआ है. भारत सरकार के द्वारा अधिक दूध उत्पादन करने के नाम पर भारतीय गोवंश की भयंकर उपेक्षा की गयी है.

बहुत अधिक मांस के उत्पादन करने और मांस के निर्यात से अधिकतम विदेशी मुद्रा प्राप्त करने के लिये भारत में कतलखानों की बाढ आ गयी है. नये कतलखाने खोलने के लिये योजनायें तैयार की गयी हैं.

विश्व में भारत शाकाहारी देश जरुर है लेकिन विश्व में सबसे अधिक मांस का उत्पादन भारत में किया जा रहा है. भारत में दूध की तेजी से बढती हुई मांग के कारण ही नकली दूध के उत्पादन को तेजी से बढावा मिल रहा है.

सींधी दुग्ध प्रधान नस्ल है.

जैविक बोर्ड

भारत में जैविक बोर्ड ही सबसे कारगर उपाय है. हर समस्या का समाधान जैविक बोर्ड के माध्यम से करना संभव है.

जैविक बोर्ड के माध्यम से रासायनिक खाद तथा कीटनाशक पर पूर्ण प्रतिबंध लग जायेगा.

लाल सींधी का संपूर्ण विकास करने के लिए भारत में जैविक बोर्ड हर राज्य में करना आवश्यक है.

2003 में सबसे पहले सिक्किम राज्य में जैविक बोर्ड विधान सभा में प्रस्ताव पारित करवाकर रासायनिक खाद तथा कीटनाशक पर पूर्ण प्रतिबंध लगवाकर 2015 में पहला जैविक राज्य बन जायेगा.

नंदी पार्क

नंदी पार्क लाल सींधी नस्ल के विकास करने के लिए सबसे कारगर उपाय है. नंदी पार्क के लिए 100 एकड़ भूमि तथा नंदी को घेरने के लिए फेंसिग की आवश्यकता है.

नंदी पार्क महापौर नगरपालिका निगम के द्वारा प्रारम्भ किया जाता है.

सबसे पहला नंदी पार्क गाजियाबाद में 500 नंदी के साथ में प्रारम्भ किया गया है. उत्तरप्रदेश की राजधानी लखनउ में भी नंदी पार्क प्रारम्भ किया गया है.

प्रतिदिन 5 गायें प्रत्येक नंदी के साथ में गाभिन की जा रही हैं.

गो अभ्यारण

मुख्यमंत्री राज्य सरकार के द्वारा गो अभ्यारण लाल सींधी नस्ल को बचाने के लिए सार्थक कदम है. 1500 एकड़ भूमि पर गो अभ्यारण प्रारम्भ करना संभव है.

पहला गो अभ्यारण मध्यप्रदेश में 2 करोड़ खर्च कर मुख्यमंत्री श्री शिवराजसिंह चौहान जी ने प्रारम्भ किया है.

सींधी कंजरवेशन ट्रस्ट

सींधी कंजरवेशन ट्रस्ट का गठन भारत में कर तुरन्त ही विश्व में जागृति वेबसाइट, यू टयूब, ब्लोग, फेसबुक, टवीटर के माध्यम से उत्पन्न करने पर सींधी नस्ल बच जायेगी.

सबसे पहले केरल में वैचूर कंजरवेशन ट्रस्ट का गठन कर वैचूर संख्या मात्र 135 को बचाने का कार्य किया गया है.

पंचगव्य डिप्लोमा

1 साल का पंचगव्य डिप्लोमा पाठयक्रम प्रारम्भ करने पर युवाओं को 30,000 रु. प्रतिमाह का स्वरोजगार मिलने पर लाल सींधी नस्ल का संरक्षण करना संभव है.

1 जनवरी 2013 से चेन्नई में पंचगव्य डिप्लोमा पाठयक्रम का प्रारम्भ 150 गोवंश के साथ में श्री निरंजन वर्मा जी अभियंता के द्वारा किया गया है.

युवाओं को निःशुल्क पंचगव्य प्रशिक्षण 1996 से 4 दिनों का दिया गया है.

सिंधी नस्ल को नियंत्रण करने में थोडी कठिनाई होती है. सिंधी नस्ल जंगली या आक्रमणकारी नहीं है लेकिन चंचल, होशियार, स्वभाव से सजग रहती हैं.

सिंधी नस्ल वर्तमान में 33 देशों में उपलब्ध है. भारत में वर्तमान में लाल सींधी नस्ल दुर्लभ होती जा रही है.

भारत में लाल सींधी नस्ल को बचाने के लिए गंभीरता के साथ में अभियान चलाने की आवश्यकता है.

एशिया, आफ्रीका, अमेरिका, ओसीयानिया में सिंधी नस्लें मौजूद हैं.

ओस्ट्रेलिया में 1954 में पाकिस्तान से पहली बार भेंट स्वरुप आयी थी. ओस्ट्रेलिया में सिंधी का विकास उसके असाधारण गुणों के कारण किया गया है. ओस्ट्रेलिया में सिंधी नस्ल का विकास विशेष ढंग से किया गया है. सिंधी नस्ल का विकास करने के लिये ओस्ट्रेलिया में लाल सिंधी बच्चों को लाल सिंधी से क्रोस होलीस्टीन फ्रीजीयन के द्वारा दूध प्राप्त कर पिलाया जा रहा है.

सिंधी का दूध बछडों के बडे दांतों के कारण प्रभावित होता है. बछडे को छोटे दांत से पीने का प्रशिक्षण दिया जाता है.

जरुरत पडने पर बोतल से भी दूध पिलाया जाता है. सिंधी नस्ल कम खाकर भी बहुत अच्छी तरह से विकसित हो जाती है. सिंधी में अफगान और

गीर का खून पाया जाता है.

बलूचिस्तान में सिंधी नस्ल पूरी तरह से सही मिल सकती है.

सिंधी का मुख्य घर कराची एवं उत्तर पूर्व है. विर्लींटन कैटल फार्म मालिर कराची के पास सिंधी गाय माताओं का पालन बहुत अच्छी तरह से किया जाता है. सिंधी नस्ल की गाय मातायें

साहीवाल जाति की गाय माताओं से बहुत कुछ मिलती जुलती हैं. सिंधी गाय मातायें बहुत ही अधिक दूध देती हैं.

सिंधी गाय माता का औसत भार 650 से 750 पौंड है. बैल का औसत भार 950 से 1000 पौंड है. 16 माह में औसत एक बच्चा देती हैं. जन्म के समय नर बच्चे का औसत भार 47 पौंड एवं मादा का औसत भार 42 पौंड होता है.

एगरीकल्चर एंड लाइव स्टोक इन इंडिया के मई 1935 में श्री लिटिल वुड ने लाल सिंधी के बारे में लिखा था कि मद्रास सरकार पिछले 12 सालों से लाल सिंधी नस्ल को विकसित करने में लगी हुई है.

दक्षिण कनाडा एवं मलाबार के वेस्ट कोस्ट में लाल सिंधी नस्ल की मांग नस्ल सुधारने के लिये है. 1924 में होसूर में लाल सिंधी नस्ल को विकसित करने के लिये भेजा गया था.

लाइव स्टोक रिसर्च स्टेशन होसूर में लाल सिंधी के बछडों को विकसित कर श्रीलंका में भेजे गये थे. ढाई साल की आयु में नस्ल सुधारने के लिये सिंधी नर को कोचीन, बंगाल, बेंगलोर में भेजे गये थे. दक्षिण भारत में लाल सिंधी नस्ल ने अहम भूमिका निभायी थी.

सिंधी गाय माता के दूध में 86.07 प्रतिशत जल है.

अन्य गोवंश की तुलना में दूध में जल की मात्रा कम होती है.

सिंधी गाय माता का दूध बहुत ही गाढा होता है.

सिंधी गाय माता के दूध में वसा 4.90 प्रतिशत है.

अन्य गोवंश की तुलना में वसा बहुत ही ज्यादा होती है.

सिंधी गाय माता के दूध में मीठास 4.91 प्रतिशत है.

अन्य गोवंश की तुलना में मिठास बहुत ही अधिक होती है.

खनिज 0.7 प्रतिशत, प्रोटीन 3.42 प्रतिशत है.

सिंधी गाय माता का दूध पीने पर गर्भधारण करने की ताकत बांझ स्त्रियों में विकसित हो जाती है. सिंधी गाय माता के अंदर रोग प्रतिरोधक क्षमता बहुत ही अधिक होती है. सिंधी गाय माता का दूध नियमित पीने पर अच्छी रोग प्रतिरोधक क्षमता विकसित हो जाती है.

सिंधी गाय मातायें एक ब्यात यानी 300 दिनों में 100 मन यानी 4000 लीटर दूध देती हैं. पेशावर एवं लखनउ में गर्वमेंट मिलटरी डेयरी फार्म में 351 दिनों में 4,600 लीटर दूध देने का किर्तीमान बना चुकी है. सिंधी ने एक दिन में 17 लीटर दूध दिया है.

सिंधी नस्ल इम्पीरियल डेयरी इंस्टीटयूट बेंगलोर, लखनउ, इलहाबाद एगरीकल्चर इंस्टीटयूट नैनी, होसूर, एगरीकलचर कोलेज डेयरी कोयम्बटूर में भी दूध देने के किर्तीमान बना चुकी है.

589 दिनों तक 5440 लीटर दूध देकर सिंधी गाय माता ने अपनी सर्वश्रेष्ठता साबित कर दी है. सिंध के उंचे नीचे प्रदेश में खेती करना संभव नहीं है इसलिये सिंध के लोग सिंधी गाय माताओं का दूध बेचकर आर्थिक रुप से बहुत ही सम्पन्न हैं. यहां के अधिकतर ग्वाले मुसलमान हैं. गो पालन पर ये मुसलमान ग्वाले बहुत ही अधिक ध्यान देते हैं क्योंकि गोपालन इनका प्रमुख कार्य है.

सिंध के बुर्रा, भगुरिया, पामर जाति के ग्वाले बहुत ही चतुर होते हैं. सिंध के सीमा प्रान्त में दोगली नस्ल पायी जाती है क्योंकि गोचर भूमि की तलाश में ग्वाले एक स्थान से दूसरे स्थान में घूमते रहते हैं. सिंधी गाय मातायें विश्व की सर्वश्रेष्ठ गाय माताओं में से एक हैं.

सदियों से सिंधी गाय माताओं की देखभाल बहुत ही अच्छी तरह से की जा रही है इसलिये सिंधी गाय माता शरीर से सुडौल होती हैं. सिंधी गाय मातायें भिन्न भिन्न जलवायु वाले देशों में भी पनप रही है इसलिये भारत से कोरिया, मलाया, ब्राजील आदि में भी सफलतापूर्वक पाली जा रही हैं.

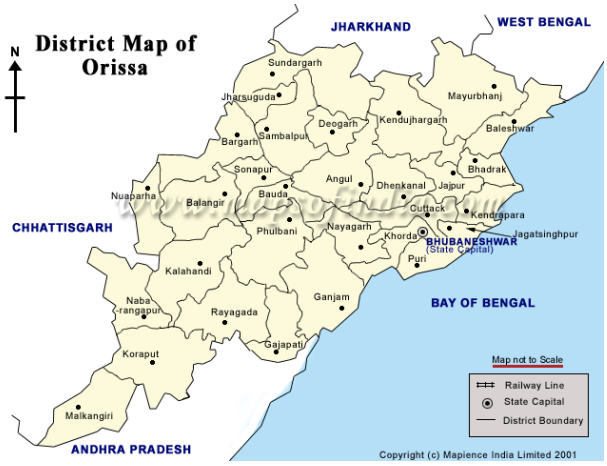

उडीसा राज्य में सेंद्रल केटल ब्रीडिंग फार्म, बसंतपुर व्हाया गोटबग्गा जिला संबंलपुर 768111 दूरभाष 06638-3569, सेंद्रल केटल ब्रीडिंग फार्म सेमीलीगुडडा डाकघर सुनाबेडा जिला कोरापुट 763002 दूरभाष 06853-20390 एवं बोलांगीर,

महाराष्ट्र में पंजाबराव कृषि विद्यापीठ, वरुड, वर्धा,

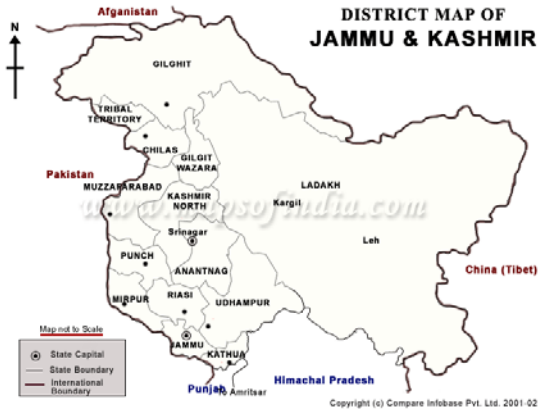

जम्मू एवं काश्मीर में बेली चराना, लक्ष्यद्वीप में गवर्मेंट डेयरी यूनिट, कवरती, केरल में कोदापदकुनू,

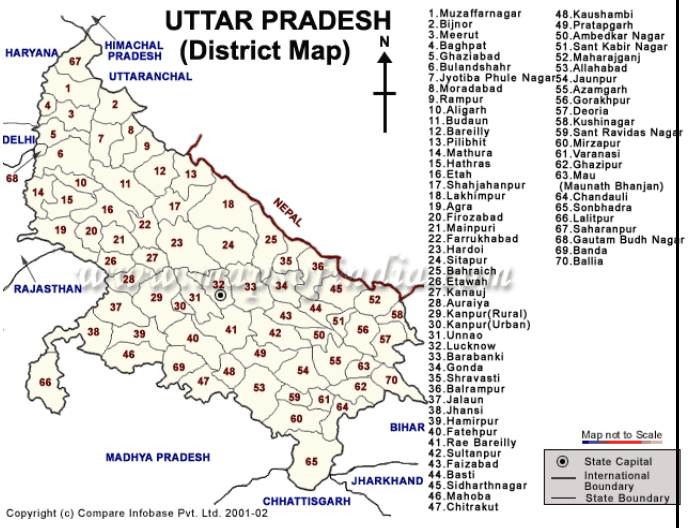

उत्तरप्रदेश में कृषि संस्थान नैनी इलाहाबाद, उत्तरांचल में पशु प्रजनन फार्म कलसी, देहरादून

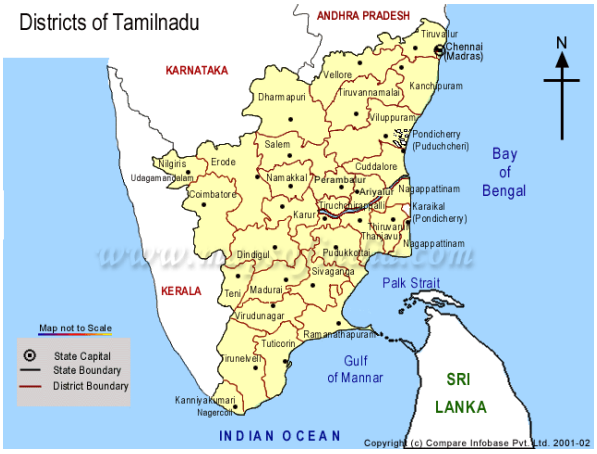

तमिलनाडू में चेतीनाड, होसूर, ओरथानाड, पूडूकोटटाई, तिरुनेलवेल्ली,

कर्नाटक में कोइला केटल फार्म 574288, गोवा में धाट,

बिहार में गोइकरमा,

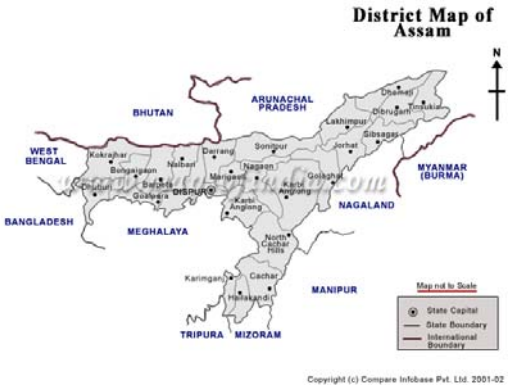

आसाम में बरपेटा पिन 781301, जगदौर, सिलचर पिन 788001, एन.डी.आर.आई करनाल, सींधी नस्ल को सुरक्षित रखने का कार्य केंद्र सरकार कर रही है. बैंगलोर में भी सींधी नस्ल के वीर्य केंद्रीय हिमित वीर्य उत्पादन एवं प्रशिक्षण संस्थान हेसरघटटा बेंगलोर कर्नाटक 560088 दूरभाष 28466227 में उपलब्ध हैं. बीमारियों से मुकाबला करने की सिंधी गाय माताओं में बहुत ही अधिक शक्ति होती है. सिंधी गाय मातायें छोटे कद की होने के कारण ही बडे आकार की गाय माताओं की तुलना में कम खाती हैं. सिंधी गाय मातायें दूध देती हैं उनमें

मक्खन बहुत ही अधिक निकलता है क्योंकि सिंधी गाय माता के दूध में वसा की मात्रा बहुत ही अधिक होती है. सिंधी गाय मातायें लगभग भारत से लुप्त हो गयी हैं. सिंधी गाय माताओं को वापस विकसित करने के लिये मेहनत करनी अनिवार्य है.

सिंधी नस्ल भारत में आर्थिक संपन्नता निश्चित रुप से ला सकती है. केंद्र सरकार एवं अनेक गैर सरकारी संगठन सिंधी गाय माताओं को विकसित करने के लिये प्रयत्नशील हैं. बेंगलोर से डाक्टर दीपक चंद्राकर जी के द्वारा सींधी नस्ल के 600 वीर्यों को लाकर

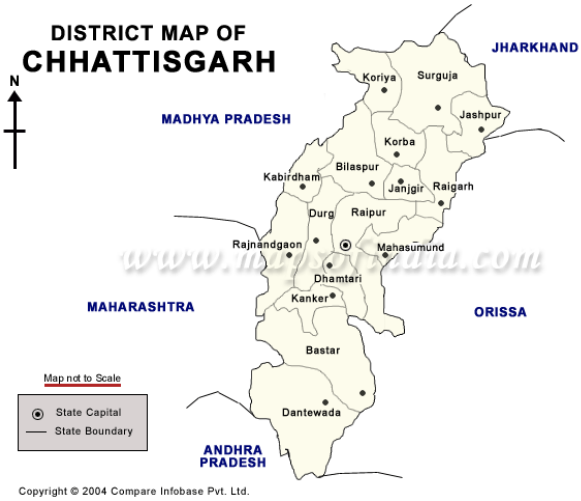

छतीसगढ राज्य में धमतरी के पास नगरी में सिंधी गाय माताओं का विकास जारी है.